बुनियादी अधिगम पर ध्यान केन्द्रित करना ज़रूरी है

नन्दिनी शेट्टी

स्कूल बच्चों को सिर्फ़ विभिन्न विषयों को सीखने में सक्षम ही नहीं बनाते बल्कि ये उनके सामाजिक, भावनात्मक और संज्ञानात्मक विकास की नींव भी रखते हैं। बच्चे, दूसरे बच्चों के साथ बेहतर ढंग से और जल्दी सीखते हैं। स्कूल बच्चों को पारिवारिक समस्याओं, बालश्रम और नशाखोरी जैसी सामाजिक बुराइयों से दूर रखते हैं। स्कूलों के बन्द होने से बच्चों को उनके सीखने में नुक़सान होने के अलावा अन्य पारिवारिक और सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ा है। बहुत-से बच्चे लिखना, पढ़ना और गणित के सवालों को हल करना भूल चुके हैं जिससे उनके वापस स्कूल जाने में बाधा खड़ी हो सकती है। इसलिए स्कूलों का शीघ्र फिर से खोला जाना अत्यन्त ज़रूरी है ताकि बच्चों के सीखने में मदद की जाए।

सेतुबन्ध कार्यक्रम

हमारे सरकारी स्कूलों में सेतुबन्ध[1] कार्यक्रम के तहत बच्चों को वर्कशीट दी गईं ताकि स्कूल बन्द रहने के समय भी सीखना लगातार जारी रहे। इन वर्कशीटों के ज़रिए अवधारणाओं को पढ़ाने का प्रयास किया गया। कक्षा–1 से 5 तक के बच्चों के लिए 45 दिनों तक सेतुबन्ध कार्यक्रम चलाया गया। बच्चों से कहा गया कि वे अपने अभिभावकों के साथ स्कूल आएँ और वर्कशीट ले जाएँ। यदि बच्चे स्कूल आने में असमर्थ रहे तो शिक्षकों ने वर्कशीट बच्चों में वितरित करने के लिए समुदाय तक पहुँचा दीं। इस कार्यक्रम के क्रियान्वयन में बहुत सारी चुनौतियाँ थीं।

वर्कशीट

वर्कशीट का इस्तेमाल, सीखी गई अवधारणाओं के अभ्यास और मूल्यांकन के लिए प्रभावी तरीक़े से किया जा सकता है। हालाँकि वर्कशीट का इस्तेमाल अवधारणा निर्माण के लिए थोड़ा मुश्किल होता है। चूँकि अभिभावक काम पर जाते हुए अपना मोबाइल फ़ोन भी ले जाते हैं इसलिए शिक्षक सभी बच्चों से फ़ोन पर सम्पर्क नहीं कर पाते थे। बहुत-से शिक्षक *कोविड–19* से जुड़े राहत प्रयासों में भी लगे हुए थे इसलिए जब बच्चे सवाल पूछने या अपने सन्देहों के निराकरण के लिए स्कूल आते थे तो शिक्षक वहाँ मौजूद नहीं होते थे। इनमें से अधिकांश वर्कशीट कक्षा विशेष की अवधारणाओं के अभ्यास के लिए थीं। वे उन अवधारणाओं से सम्बन्धित नहीं थीं जिन्हें पिछले सालों में पढ़ाया गया था। चूँकि बच्चे पढ़-लिख नहीं पा रहे थे और पिछले सालों में उन्होंने जो सीखा था उसे वे भूल चुके थे इसलिए वे वर्कशीटों को पढ़ने, समझने और उनमें दिए गए प्रश्नों के उत्तर देने में असमर्थ थे। बच्चे या तो बिना उत्तर लिखे खाली वर्कशीट लौटा रहे थे या पिछली वर्कशीटों में लिखे उत्तरों की नक़ल कर दे रहे थे। अतः यह कहा जा सकता है कि सेतुबन्ध कार्यक्रम को सार्थक ढंग से लागू करना सम्भव नहीं था।

सीखने का नुक़सान

पिछले डेढ़ साल की स्कूल बन्दी ने बच्चों के सीखने पर कई तरह के प्रभाव डाले हैं। जिन स्कूलों से मैं जुड़ी हुई हूँ, वहाँ मैंने पाया कि जल्दी सीखने वाले बच्चे भी वे सब चीज़ें भूल चुके हैं जो उन्होंने पिछली कक्षाओं में सीखी थीं और मूलभूत कौशलों (पढ़ना, गुणा और भाग देना) के साथ संघर्ष कर रहे थे। हालाँकि, जब हम इन अवधारणाओं पर दुबारा रोशनी डालते हैं तो उन्हें वह सब याद आ जाता है जो उन्होंने सीखा था और वे इसे जल्दी से सीख जाते हैं।

दूसरी तरफ़, वे बच्चे जो सीखने में थोड़ा धीमे थे, वे बच्चे जो चरणबद्ध तरीक़े से सीखते थे उनका सीखने में बहुत ज़्यादा नुक़सान हुआ। उदाहरण के लिए, गणित में शुरुआत में इन बच्चों को अवधारणा निर्माण के लिए ठोस सामग्री मुहैया कराई गई थी, उसके बाद चित्रों की सहायता से उन अवधारणाओं को पुनः स्थापित किया गया था और अन्त में संख्याओं के रूप में अमूर्त सवाल करने के लिए दिए गए थे। कक्षा–4 के तीन बच्चे, जिन्हें इस तरीक़े से सिखाया गया था और जो पहले दो अंकों वाली संख्याओं को बढ़ते और घटते क्रम में पहचान सकते थे और लिख सकते थे, छोटी और बड़ी संख्याओं को पहचान सकते थे, जोड़ने और घटाने के तरीक़े (अपनी कक्षा के उपयुक्त अवधारणा के अनुरूप) को जानते थे और समझते थे, अब उनमें मात्रा की कोई समझ नहीं रह गई थी जिसे कि उन्होंने पहले सीख लिया था। उदाहरण के लिए, अब वे बच्चे बड़ी और छोटी संख्याओं में अन्तर नहीं कर पाते। वे यह भी नहीं बता पाते कि 20 में कितना और जोड़ने से 30 हो जाएगा। वे 3 + 5 = ? जैसे सवालों को भी नहीं समझ पाते और हल भी नहीं कर पाते। इन बच्चों को कक्षा–4 की

विषयवस्तु पढ़ाने का कोई फ़ायदा नहीं होगा क्योंकि वे कुछ भी समझ नहीं पाएँगे। ज़रूरत है कि हम उन्हें कक्षा–1 में पढ़ाई गई अवधारणाओं को फिर से पढ़ाएँ।

इसी तरह, उन बच्चों का इस दौरान कन्नड़ भाषा से कोई सम्पर्क नहीं रहा, जिनकी मातृभाषा कोई दूसरी भाषा थी। वे कन्नड़ वर्णों को पूरी तरह से भूल चुके हैं और ज़रूरत है कि अब उन्हें *अक्षर* (aksharas), *गुणिताक्षर* (gunitaksharas) और *ओत्ताक्षर* (ottaksharas) फिर से पढ़ाए जाएँ। इसलिए हम सीखने के इस नुक़सान की भरपाई 30 से 45 दिनों के अन्दर नहीं कर पाएँगे।

बुनियादी अधिगम पर ध्यान केन्द्रित करना

सेतुबन्ध कार्यक्रम अब बन्द हो गया है और स्कूलों को सारी कक्षाओं के लिए पाठ्यपुस्तकें मिल चुकी हैं। इसका अर्थ है कि अब कक्षा विशेष के स्तर के अनुरूप अवधारणाओं को पढ़ाना होगा। कक्षा के अनुरूप अवधारणाओं का निर्माण भाषा और गणित (पढ़ना, लिखना, संख्या की अवधारणाएँ, जोड़ना, घटाना, गुणा और भाग) की बुनियादी अवधारणाओं व अन्य बुनियादी अवधारणात्मक ज्ञान पर निर्भर करेगा। बुनियादी रूप से, सार्थक तरीक़े से सीखने को सुनिश्चित करने के लिए, हमें यह पक्का करना होगा कि बच्चे बुनियादी भाषा और गणितीय कौशल सीख चुके हों। इन कौशलों को बच्चों के उनके स्तर अनुरूप अवधारणाओं के पहले या उनके साथ सिखाए जाने की ज़रूरत है। विज्ञान और सामाजिक विज्ञान के पाठ पढ़ाते हुए हमें मूलभूत अवधारणाओं के साथ शुरुआत करनी चाहिए। यदि हम सीखने की प्रक्रिया में आई इन दरारों को भरने का प्रयास नहीं करते हैं तो बच्चे सीखने में अपनी रुचि खो सकते है और स्कूल आना छोड़ भी सकते हैं।

आगे का रास्ता

बच्चों की क्षमताओं का मूल्यांकन करना

पहले बताए गए कारणों की वजह से यह बेहद ज़रूरी हो जाता है कि प्रत्येक बच्चे के सीखने के स्तर को समझा जाए। इस मूल्यांकन के लिए हमें साधारण, अनौपचारिक और सार्थक तरीक़ों की ज़रूरत होती है। जब बच्चे स्कूल में आते हैं या जब शिक्षक बच्चों से मिलने उनके समुदायों में जाते हैं तो उनसे बातचीत करते हुए, साधारण सवाल पूछकर, उन्हें साधारण शब्द और वाक्य पढ़वाकर और उनसे साधारण सवाल हल करवाते हुए उनका मूल्यांकन किया जा सकता है। इन तरीक़ों के ज़रिए बुनियादी भाषा, गणित और अन्य विषयों में प्रत्येक बच्चे की क्षमता का मूल्यांकन किया जा सकता है। इससे हमें वह समझ हासिल होगी कि प्रत्येक बच्चे को किस स्तर से पढ़ाना शुरू करना है और बच्चों की सीखने की ज़रूरतों के आधार पर हम उन्हें समूहों में बाँट सकते हैं।

फिर से शुरुआत करना

जब तक स्कूल बन्द हैं, शिक्षकों को पढ़ाने के लिए बच्चों के समुदायों में जाना होगा। हम दो या तीन बच्चों के छोटे समूह बना कर शुरुआत कर सकते हैं। प्रत्येक अवधारणा को पढ़ाने के बाद हमें उन्हें साधारण वर्कशीट देनी होंगी जिन पर वे पढ़े हुए का अभ्यास कर सकें। प्रत्येक बच्चे की प्रगति पर नज़र रखने के लिए समय-समय पर अनौपचारिक मूल्यांकन किया जाना चाहिए। प्रत्येक बच्चे के लिए एक पोर्टफ़ोलियो बनाया जाना चाहिए और उसमें इन मूल्यांकनों का सार शामिल किया जाना चाहिए। जब बच्चा किसी अवधारणा विशेष की साफ़ समझ हासिल कर ले उसके बाद ही दूसरी अवधारणा के बारे में उसे बताना चाहिए। इसके अलावा किसी एक अवधारणा के लिए भी हम सिर्फ़ एक वर्कशीट का इस्तेमाल नहीं कर सकते क्योंकि एक समूह के अन्दर भी बच्चे सीखने के विभिन्न स्तरों पर होंगे। अतः प्रत्येक अवधारणा के लिए कई वर्कशीट तैयार करने की ज़रूरत है जो सीखने की विविध ज़रूरतों को पूरा कर सकें। उदाहरण के लिए, यदि हमें चार अंकों वाली संख्याओं का जोड़ सिखाने की ज़रूरत है तो हम इन चरणों का अनुसरण कर सकते हैं :

चरण- 1 : एक अंक की संख्या से शुरुआत करें। बच्चों के सामने ऐसे वक्तव्यों के रूप में साधारण सवाल रखे जाना चाहिए जिन्हें बच्चा अपने रोज़मर्रा के जीवन से जोड़ सके। इससे बच्चा जोड़ने की अवधारणा को समझ सकेगा। यदि बच्चा इन सवालों को हल करने में असमर्थ हो, तो जोड़ना सिखाने के लिए उसके सामने कुछ ठोस वस्तुएँ रखी जानी चाहिए। इसके बाद बच्चों को संख्याओं से इन वस्तुओं का निरूपण करना सिखाया जा सकता है। धीमे सीखने वाले बच्चों के लिए यह ज़रूरी है कि उनके साथ ठोस वस्तुओं और कई तरह की गतिविधियों का इस्तेमाल किया जाए। जब बच्चा संख्याओं के सवालों को ठीक से हल करना शुरू कर दे तब उसे आगे के अभ्यास के लिए वर्कशीट दी जानी चाहिए।

चरण- 2 : अब, दो अंकों वाली संख्याओं (20 तक) के सवाल दिए जाने चाहिए। जैसा कि एक अंक वाले सवालों के साथ किया था, वैसे ही जो बच्चे सवालों को हल करने में कठिनाई महसूस करते हैं उन्हें अभ्यास के लिए ठोस वस्तुएँ प्रदान करनी चाहिए। जब वे सवाल हल करने लगें तब उन्हें अभ्यास के लिए वर्कशीट दी जा सकती हैं।

चरण- 3 : दो अंकों की छोटी संख्याओं के साथ किए जाने वाले दहाई तक के हासिल वाले जोड़ को दहाई के बण्डलों का इस्तेमाल करके समझाया जा सकता है। बहुत-से बच्चों को हासिल के साथ अंकों के जोड़ को समझने में दिक़्क़त होती है। इसलिए उन्हें कई सवालों को दहाई के बण्डलों का

इस्तेमाल करते हुए हल करने के अवसर देना ज़रूरी है। वे जितना ज़्यादा इसका अभ्यास करेंगे, उतनी अच्छी तरह उन्हें यह अवधारणा स्पष्ट होगी। इससे भविष्य में बच्चों को हासिल वाली संख्याओं के जोड़ की कलन विधि (algorithm) को सीखने में मदद मिलेगी।

चरण- 4 : जब बच्चे दहाई के बण्डलों का इस्तेमाल करते हुए जोड़ना सीख जाएँ तब उन्हें कलन विधि का इस्तेमाल करते हुए संख्याओं के सवाल हल करने के लिए दिए जाने चाहिए। उन्हें सही चरणों का इस्तेमाल करते हुए जोड़ करना चाहिए। अभ्यास के लिए उन्हें वर्कशीट दी जानी चाहिए।

चरण- 5 : जब बच्चे उपरोक्त अवधारणाओं से परिचित हो जाएँ तब उन्हें तीन और चार अंकों वाले जोड़ के सवाल दिए जा सकते हैं। जब बच्चे ठोस वस्तुओं के साथ अभ्यास कर चुकें हों तब उन्हें संख्याओं के सवाल दिए जाने चाहिए। प्रत्येक अवधारणा के लिए प्रत्येक स्तर पर अभ्यास के लिए प्रासंगिक वर्कशीट बनाई जानी चाहिए।

चरण- 6 : अब इस चरण में, एक से चार अंकों वाली संख्याओं के जोड़ के सवाल वाली वर्कशीट दी जानी चाहिए। यह अन्तिम मूल्यांकन वर्कशीट होगी। जो बच्चे अन्तिम मूल्यांकन वर्कशीट को सही तरीक़े से पूरा करने में सक्षम हों उन्हें नई अवधारणाएँ बताई जा सकती हैं। जो बच्चे वर्कशीट को पूरा न कर पाएँ, उनकी ग़लतियों को चिन्हित किया जाना चाहिए और उन्हें सम्बन्धित अवधारणाएँ फिर से पढ़ाई जानी चाहिए। इसके बाद, फिर से मूल्यांकन करना चाहिए।

यह बेहतर होगा कि प्रत्येक चरण की शुरुआत ऐसे वक्तव्यों का रूप लिए सवालों से की जाए जो वास्तविक जीवन से जुड़े हों। अन्तिम मूल्यांकन करने से पहले, हर दो चरणों के बाद भी मूल्यांकन किया जा सकता है। हर एक चरण में बच्चे के सीखने और उसके मूल्यांकन के ब्यौरे का दस्तावेज़ीकरण करके उसे बच्चे के पोर्टफ़ोलियो का हिस्सा बनाया जाना चाहिए।

सभी बच्चों की प्रगति को समय-समय पर जाँचना चाहिए। हमें धीमे सीखने वाले बच्चों पर ख़ास ध्यान देना चाहिए, चाहे इसके लिए हमें कुछ अतिरिक्त प्रयास भी क्यों न करना पड़ें क्योंकि सिर्फ़ इसी तरीक़े से बच्चा बेहतर भविष्य हासिल कर सकता है। बच्चे शिक्षा व्यवस्था में तभी रह पाएँगे जब वे बेहतर तरीक़े से सीखेंगे और जब सीखने की निरन्तरता होगी।

स्कूल छोड़ने से बच्चों को रोका जाए

स्कूल खुलने पर हमारा मुख्य काम होगा कि हम बच्चों को वापस स्कूल ले कर आएँ। हो सकता है कि स्कूल बन्दी के समय में बच्चे विभिन्न प्रकार के शारीरिक, यौनिक और मानसिक दुर्व्यवहार के शिकार हुए हों। हो सकता है कुछ ने अपने माँ-बाप या परिवार के अन्य सदस्यों को खो दिया हो। जैसा कि हम जानते हैं कि बहुत सारे बच्चे अपने घर की आर्थिक दुर्दशा के कारण काम पर जाने लगे हैं। इन बच्चों को वापस स्कूल लाना बहुत कठिन होगा। यह ज़रूरी है कि हम ऐसे बच्चों के माता-पिता और अभिभावकों से बातचीत करें और उन्हें बच्चों को वापस स्कूल भेजने के लिए राज़ी करें। हमें बच्चों से भी बात करने की ज़रूरत है। यह भी एक कठिन काम लग सकता है लेकिन इस ओर प्रयास करना अत्यधिक ज़रूरी है।

वर्तमान में बच्चों में नियमित स्कूल आने की आदत ख़त्म हो चुकी है। वे बच्चे जो पहले ही स्कूल कम आते थे, अब शायद स्कूल वापस आने में रुचि न दिखाएँ। यह ज़रूरी है कि हम इन बच्चों से मिल कर उन्हें वापस स्कूल आने के लिए राज़ी करें। स्कूल में बच्चों की अनुपस्थिति से बचने का एक ही तरीक़ा है कि हम बच्चों की मानसिक स्थिति व उनके सामने आ रही समस्याओं को समझें और उनके साथ प्यार से पेश आएँ। जब वे वापस स्कूल आएँ तो उन्हें चित्रकारी, रंग भरने और ऐसी दूसरी गतिविधियों में शामिल करें जिनमें उनकी रुचि हो और उसके बाद ही उन्हें अकादमिक अधिगम की प्रक्रिया में शामिल किया जाए। यह उन बच्चों के लिए तो अत्यन्त ज़रूरी है जिन्होंने सीखने की रुचि गँवा दी हो। वे बच्चे जिन्होंने स्कूली शिक्षा में अपनी रुचि खो दी है, उन्हें सीखने की गतिविधियों से तारतम्य बिठाने में थोड़ा समय लग सकता है। कक्षा में सचेत बैठने और पाठ को ध्यान से सुनने की आदत शायद उनमें अब न हो। अतः पाठ की योजना इस तरह बनानी होगी कि उसमें बहुत-सी गतिविधियाँ शामिल की जाएँ और उनमें अवलोकन, प्रायोगिक कार्य और आँकड़ों के संग्रहण के ढेर सारे अवसर हों जिससे बच्चों को कक्षा से बाहर जाने का मौक़ा मिले। इससे बच्चों की उत्साहवर्धक भागीदारी सुनिश्चित हो सकेगी। हमें अनौपचारिक मूल्यांकन पद्धतियों के ज़रिए बच्चों की सीखने की क्षमता को जाँचते रहने की ज़रूरत है।

कोविड–19 महामारी ने बहुत-से बच्चों के जीवन को अस्थिर बना दिया है। इन बच्चों के भविष्य को बचाने की ज़िम्मेदारी हमारे ऊपर है। अगर हम उनके सीखने की निरन्तरता बनाए रखने के लिए उपयुक्त क़दम नहीं उठाते तो बहुत से बच्चे इस शिक्षा व्यवस्था से पूरी तरह बाहर हो जाएँगे। यदि हम बच्चों को शिक्षा व्यवस्था से बाहर हो जाने देंगे तो बहुत से परिवारों को भविष्य में आर्थिक, सामाजिक और पारिवारिक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। इससे समाज में व्याप्त असमानता की खाई और ज़्यादा बढ़ जाएगी। इस स्कूलबन्दी

के कारण बच्चों ने आनन्ददायी स्कूली जीवन का महत्त्वपूर्ण डेढ़ साल खो दिया है। गुणवत्ता वाली शिक्षा सभी बच्चों का अधिकार है। किसी भी परिस्थिति में बच्चों को इससे वंचित नहीं किया जा सकता और हमारा कर्तव्य यह सुनिश्चित करना है कि शिक्षा का उनका अधिकार सुरक्षित रहे।

Endnotes

i सेतुबन्ध कार्यक्रम, कर्नाटक राज्य सरकार द्वारा राज्य के सभी सरकारी कन्नड़ माध्यम स्कूलों में लागू किया गया था।

नन्दिनी शेट्टी अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन की सदस्य हैं और बेंगलूरु शहर में सरकारी स्कूलों के साथ काम करती हैं। उन्होंने जवाहर लाल नेहरू सेंटर फ़ॉर एडवांस साईंटिफ़िक रिसर्च (JNCASR), बेंगलूरु से पीएचडी की है। उनसे nandini.shetty@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** अमिता शीरीं